

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लत्तुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये त्रयोदशं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে ত্রয়োদশং দশকম্ ॥

হিরণ্যাক্ষরধরণনম্

হিরণ্যাক্ষং তারদ্বরদ ভরদন্বেষণপরং

চরন্তং সাংরতে পযসি নিজজঙ্ঘাপরিমিতে।

ভরদ্বক্তো গংরা কপটপটুধীর্নারদমুনিঃ

শনৈরুচে নন্দন্ দনুজমপি নিন্দংস্তর বলম্ ॥ 13.1 ॥

স মাযারী রিষুংহরতি ভরদীয়াং রসুমতীং

প্রভো কষ্টং কষ্টং কিমিদমিতি তেনাভিগদিতঃ।

নদন্ ক্লাসৌ ক্লাসারিতি স মুনিনা দর্শিতপথো

ভরন্তং সম্প্রাপদ্ধরণিধরমুদ্যন্তমুদকাৎ ॥ 13.2 ॥

অহো আরণ্যোহযং মৃগ ইতি হসন্তং বহুতরৈ -

দুরুর্তৈর্বিধ্যন্তং দিতিসুতমরজ্জায় ভগরন্।

মহীং দৃষ্টরা দংষ্ট্রাশিরসি চকিতাং স্নেন মহসা

পযোধারাধায় প্রসভমুদযুঙ্কথা মৃধরিধৌ ॥ 13.3 ॥

গদাপাণৌ দৈতেৎ ৎরমপি হি গৃহীতোন্নতগদো

নিযুদ্ধেন ক্রীডন্ ঘটঘটররোদঘুষ্টরিযতা।

রণালোকৌৎসুক্যান্মিলতি সুরসঙ্ঘে দ্রুতমমুং

নিরুঙ্ক্যাস্সঙ্ক্যাতঃ প্রথমমিতি ধাত্রা জগদিষে ॥ 13.4 ॥

গদোন্নর্দে তস্মিংস্তর খলু গদায়াং দিতিভুরো

গদাঘাতাদ্ধুমৌ ঝটিতি পতিতায়ামহহ ! ভোঃ !!

मृदुस्मेरास्यस्त्रुं दनुजकुलनिर्मूलनचणं
महाचक्रं स्मृत्वा करभुरि दधानो रुरुचिषे ॥ 13.5 ॥

ततः शूलं कालप्रतिमरुषि दैत्ये रिसृजति
त्रयि छिन्दत्येनं करकलितचक्रप्रहरणां।
समारुष्टो मुष्ट्या स खलु रितुदंस्त्रां समतनो
गलन्याये मायास्त्रुयि किल जगन्नोहनकरीः ॥ 13.6 ॥

भरुचक्रज्योतिष्कणलरनिपातेन रिधुते
ततो मायाचक्रे रिततघनरोषाक्कमनसम्।
गरिष्ठाभिर्मुष्टिप्रहृतिभिरभिघ्नन्तमसुरं
स्वपादास्त्रुष्टेन शरणपदमूले निररधीः ॥ 13.7 ॥

महाकायस्सेसाहयं तर चरणपातप्रमथितो
गलद्रक्तो रज्ज्वादपतदृषिभिः श्लाघितहतिः।
तदा त्रामुद्दामप्रमदभररिद्योतिहृदया
मुनीन्द्रास्सान्द्राभिः स्तुतिभिरनुरन्नध्ररतनुम् ॥ 13.8 ॥

त्रयि छन्दो रोमस्त्रुपि कुशगणश्चक्रुषि घृतं
चतुर्होतारोहृष्टौ ऋगपि रदने चोदर इडा।
ग्रहा जिह्वायां ते परपुरुष कर्णे च चमसा
रिभो सोमो रीर्यं ररद गलदेशेहप्युपसदः ॥ 13.9 ॥

मुनीन्द्रैरित्यादिसुरनमुखरैर्मोदितमना
महीयस्या मूर्त्या रिमलतरकीर्त्या च रिलसन्।
स्वधिष्यं सम्प्राप्तः सुखरसरिहारी मधुरिपो
निरुक्त्या रोगं मे सकलमपि रातालषपते ॥ 13.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्रयोदशं दशकं समाप्तम् ॥